प्रजापिता ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'रूहानी उड़ान ' कार्यक्रम

------

22 सितंबर 2019

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा अध्यात्म को जीवन शैली के रूप में अपनाने वाले युवाओं के लिए तैयार की गई और ओम शांति रिट्रीट सेंटर में आयोजित की जा रही इस आध्यात्मिक यात्रा 'रूहानी उड़ान' में सम्मिलित होना मेरे लिए बहुत प्रसन्नता की बात है। यह एक अनूठा अध्ययन केंद्र है जहां का शांत वातावरण अध्ययन और आत्मोत्थान के लिए सर्वथा अनुकूल है। इसका हरित और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वातावरण परम सुख की अनुभूति के लिए अत्युत्तम है।

मित्रो, ब्रह्माकुमारियाँ अध्यात्म का पर्याय बन गई हैं। अपने स्थापना काल से ही यह संस्था विश्व कल्याण और व्यक्तिगत उत्थान के प्रति समर्पित विश्व विख्यात आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में जानी जाती रही है।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अद्वितीय, आध्यात्मिक और मूल्य-आधारित शैक्षणिक संस्था के रूप में विकसित हुआ है। अध्यात्म के विभिन्न पक्षों को समाविष्ट करते हुए इस विश्वविद्यालय ने मानवता के सामाजिक-सांस्कृतिक ज्ञानोदय में सार्थक योगदान किया है। इतने वर्षों में ब्रह्माकुमारियों ने अपने अनवरत त्याग, आस्था, विश्वास और इस उद्देश्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बल पर अध्यात्म के क्षेत्र में विशेष स्थान बनाया है और वैयक्तिक स्तर पर शांति और उन्नति के माध्यम से समाज में बदलाव लाया है। मुझे यह देखकर खुशी हुई है कि एक अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक संस्था और सामाजिक-आध्यात्मिक संगठन के रूप में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सभी महाद्वीपों में स्थापित अपने केन्द्रों के माध्यम से समाज के नैतिक उद्धार के प्रति प्रतिबद्ध है।

मित्रो, मानव सभ्यता के विकास काल से ही भारत अध्यात्म, शांति और मानवता के प्रति प्रेम का केंद्र रहा है। अध्यात्म हमारी जीवन शैली में है। वेदों और उपनिषदों जैसे हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी अध्यात्म और विश्व शांति का समर्थन किया गया है। वसुधैव कुटुम्बकम अर्थात सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है, का व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण हमारी संस्कृति और मानसपटल पर अंकित है।

विशिष्ट अतिथिगण, युवा वर्ग सदैव ब्रह्माकुमारियों का आधार रहा है। यह जानकर खुशी हुई है कि इस सुविख्यात संगठन के साथ अनेक युवा जुड़े हुए हैं जो हिंसा से किनारा करते हुए शांतिमय जीवन जीते हैं, महिलाओं का आदर करते हैं और समाज की भलाई के प्रयास करने के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहते हैं। ब्रह्माकुमारियों की संस्कृति से ही उन्हें त्याग और समस्त मानवजाति की सेवा की भावना को आत्मसात करने में मदद मिली है। मुझे बताया गया है कि ब्रह्माकुमारियों के युवा अनुयायी समय-समय पर कौशल विकास

कार्यक्रमों और स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करते हैं; बच्चों को शिक्षा प्रदान करके और उनकी अन्य जरूरतों को पूरा करके मलिन बस्तियों को दिव्य नगरी में परिवर्तित करने में सहायता करते हैं।

यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि ये प्रतिभाशाली युवा पिछले 10 सालों से राष्ट्रीय अखंडता शिविरों और जीवन कौशल शिविरों का आयोजन करते आ रहे हैं। इससे युवाओं और राष्ट्र निर्माण के प्रति आपकी प्रतिबद्धता का परिचय मिलता है। इसके अलावा आपकी अन्य पहलों जैसे - देश के कोने-कोने में आम जनता तक पहुँचने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों, सम्मेलनों, परियोजनाओं, रिट्रीट और रैलियों के आयोजन के माध्यम से समावेशी और सतत विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलेगा। इनसे शांति, स्वच्छता और संवहनीय विश्व के संदेश का भी प्रचार और प्रसार हो सकेगा।

वैश्वीकरण के इस युग में जहां नैतिक मूल्यों का बहुत तेजी से ह्रास हो रहा है, वहाँ युवा पीढ़ी को निष्ठा, साहस और दृढ़निश्चय आदि जैसे मूलभूत मूल्यों की शिक्षा देना बहुत आवश्यक है। युवा प्रत्येक देश की सबसे मूल्यवान संपत्ति होते हैं और हम इस मामले में बहुत सौभाग्यशाली हैं। भारत विश्व के युवा देशों में से एक है जहां 65 प्रतिशत लोगों की आयु 35 वर्ष से कम है। अब हमारे सामने यह चुनौती है कि इन युवाओं की ऊर्जा का उपयोग राष्ट्रहित में करते हुए हम विश्व में अग्रणी भूमिका निभाएँ।

युवा ऊर्जा का उपयोग राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देने, राष्ट्र निर्माण और सकारात्मक कार्यकलापों के लिए किया जाना चाहिए। सकारात्मक आध्यात्मिकता से इन चुनौतियों को पूरा करने में मदद मिल सकती है और युवाओं को सफलता प्राप्त करने के लिए आत्म-विश्वास और दृढ़निश्चय विकसित करने के पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। आत्मविश्वास और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण व्यक्ति पावन जीवन जीने की शैली को आत्मसात कर समाज के लिए आदर्श बन सकते हैं। आज के चुनौतीपूर्ण वैश्विक संदर्भ में जहां एक ओर युवाओं को राष्ट्र-निर्माण के विभिन्न कार्यकलापों में सम्मिलित करते हुए उनके नेतृत्व के गुणों और व्यक्तित्व को संवारा जा रहा हैं, वहीं दूसरी ओर विश्व में भुखमरी, गरीबी, महिलाओं के प्रति अपराध, भ्रष्टाचार और आतंकवाद की समस्याएँ भी हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है कि उत्साही और सक्रिय युवाओं की एक ऐसी पीढ़ी तैयार की जाए जो सभी चुनौतियों का डटकर सामना करे और 21वीं शताब्दी के नए भारत के निर्माण के प्रति योगदान के सपने को सार्थक ढंग से साकार करे।

मैं अध्यात्म के युवा संदेशवाहकों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे अपने आस-पास के लोगों को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे। मैं एक बार फिर आयोजकों का आभार व्यक्त करता हूँ और उनके सभी भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ।